रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १६: ज्ञान बोहित (विवेक की किश्ती)

'ज्ञान बोहित', 'विवेक की किश्ती', 'भृगु' की धरती पर गुरु नानक दिलचस्प मिसाल प्रस्तुत करते हैं जिस में वह विपरीत हालात का हक़ीक़ी समाधान बताते हैं। यह उन संतों की यादों से भी गुज़रता है जिन का नज़रिया गुरु नानक से मिलता हैं।

पउण गुरू पाणी पित जाता ॥
उदर संजोगी धरती माता ॥
रैण दिनस दुइ दाई दाइआ जग खेलै खेलाई हे ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

हवा गुरु समान है और जल पिता के समान है।
धरती पालनहार है जो माता की कोख के समान है।
दिन और रात दाई और दाइयों के समान हैं जो दुनिया को खेल-खिलाते हैं।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कुदरती वसीलों को संभालने पर ज़ोर दिया। पर्यावरण प्रेमी के रूप में उन्होंने मानवीय संबंधों की तुलना कुदरत के तत्वों से की। मिसाल के लिये, हवा स्वास्थ्य के लिये प्राणाधार है और गुरु नानक ने हवा को एक शिक्षक के रूप में महिमामंडित किया है जो हमारे रूहानी अस्तित्व के लिये महत्वपूर्ण है। जल जीवन का संरक्षक है और उसे पिता समान माना गया है जो पालनहारा है। जैसे पृथ्वी अहार प्रदान करती है उसी प्रकार मां अपनी कोख मे गर्भ का पोषण करती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने दौलताबाद से उत्तर की ओर सफ़र किया और भरूच, प्रभास पटन, जूनागढ़, अहमदाबाद से उज्जैन होते हुये चित्तौड़गढ़ पहुंचे। उन्होंने सबसे पहले दौलताबाद से भरूच का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये, अब हम दौलताबाद से भरुच जा रहे हैं।

भरूच इंडिया के राज्य गुजरात में है। यह प्राचीन शहर नर्मदा नदी के तट पर उस इलाके में स्थित है जहां नदी अरब सागर में गिरती है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भरूच जहाज़ निर्माण का केंद्र था और इसका बंदरगाह व्यापार के लिये महत्वपूर्ण था।

नर्मदा इंडिया की सात पवित्र नदियों में शामिल है। अन्य छह नदियां गंगा, जमुना, सिंधु, गोदावरी, कावेरी और आलोप हो चुकी सरस्वती हैं। हिंदू मज़हब का मानना है कि इनमें से किसी भी नदी में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं।

नर्मदा नदी के तट पर हम सबसे पहले 'भृगु ऋषि मंदिर' जा रहे हैं जो कि भृगु ऋषि के लिये बनाया गया एक प्राचीन स्थल है। भरूच का नाम भृगु ऋषि के नाम पर रखा गया है जो प्राचीन इंडिया के 'सपत ऋषियों' में से एक हैं।

भृगु ऋषि को "ब्रहम चिंता प्रणाली" के रचनाकार के रूप में जाना जाता है, जिस में विज्ञान की पांच सर्वोच्च विधाओं का ज्ञान है जिसमें ज्योतिष भी शामिल है। भृगु ऋषि अपने लेखन 'भृगु संहिता' के लिये प्रसिद्ध हैं।

धर्मेश भाई सतीश भाई: भरूच का नाम पहले भृगु कच्छ था। उसके बाद भरूच रखा गया। भृगु ऋषि ने स्वयं भरूच की स्थापना की थी। उन्होंने भृगु संहिता लिखी थी।

भरूच हिंदुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल था। रूहानियत के आरज़ूमंदों के साथ गोष्ट करने के लिये गुरु नानक इस शहर में आये थे।

नर्मदा नदी के तट पर एक तपस्विनी गुरु नानक और भाई मरदाना के पास पहुंची। उसने सलाह मांगी कि अपने मन को इलाही हाज़रा-हज़ूर के साथ कैसे मिलाया जाये। जवाब में, गुरु नानक ने गाया,

ना मनु मरै न कारजु होइ ॥
मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥
मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥
निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥
आपु निवारि बीचारे सोइ ॥
(राग गौड़ी गुआरी, गुरु नानक)

जब तक मन के अंदर की नकारात्मक सोच नहीं मर जाती तब तक सकारात्मक कार्य सिद्ध नहीं हो सकते।
द्वैत में उलझे मन पर बुरे इरादे कब्ज़ा कर लेते हैं।
जब मन को रूहानी विवेक की समझ मिल जाती है तब वह चेतना में विलीन हो जाता है।
निरंकार हाज़रा-हज़ूर के गुण सृजना के हर रूप में मौजूद हैं।
मनुष्य अहंकार के बंधनों से मुक्त होकर ही सामान्य ज्ञान के अभ्यासों में संलग्न हो सकता है।
जब तक मन के अंदर की नकारात्मक सोच नहीं मर जाती तब तक सकारात्मक कार्य सिद्ध नहीं हो सकते।
(राग गौड़ी गुआरी, गुरु नानक)

चैन तो पूरी दुनिया को चाहिये लेकिन चारों तरफ बेचैनी नज़र आती है। मन मानवीय जज़्बात को काबू करता है। जब मनुष्य अपनी पहचान को मन से अलग कर लेता है तो उससे उत्पन्न होने वाले जज़्बात मंद हो जाते हैं। उसके बाद विचारों की पाकीज़गी बचती है। जब विचार और इरादे निर्मल हो जाते हैं तो चैन मिलता है।

तारा सिंह नरोतम ने अट्ठारह सौ चौरासी में अपनी पुस्तक ' गुरु तीरथ संग्रह' में लिखा था कि भरुच में गुरु नानक के आने की याद में 'उदासीन' बिरादरी ने 'नानक वाड़ी' नामक स्थान का निर्माण किया था। इस स्थान के महंत नर्बदा दास नामवर 'उदासीन' संत थे। वह स्थान भरूच रेलवे स्टेशन के पास था। जब अट्ठारहवीं शताब्दी में अंग्रेज़ों द्वारा भूमि का अधिग्रहण किया तो उस स्थान का निशान मिट गया।

गुरु नानक के यहां आने की याद में सिख बिरादरी ने उन्नीस सौ अठासी में नर्मदा नदी के तट पर गुरुद्वारा चादर साहिब का निर्माण किया।

अमरदीप सिंह: भरूच शहर नर्मदा नदी के तट पर प्राचीन काल से आबाद है। यह गुरुद्वारा गुरु नानक के यहां आने की यादगार है।

इस स्थान पर लगी सूचना पट्टिका में दर्ज है कि गुरु नानक और भाई मरदाना रात में नर्मदा नदी के तट पर पहुंचे। जब नाविकों ने रात के अंधेरे में उन्हें नदी पार करवाने से मना कर दिया तो गुरु नानक ने नदी में एक चादर बिछाई और उस पर तैर कर नदी पार की। इस घटना का उल्लेख पहली ' जन्मसाखियों' में नहीं है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर सफ़र करते हुये, हमारा सामना ऐसे कई वृतांत से हुआ जो भोले-भाले लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिये बनाये गये लगते हैं। जब मैं गुरु नानक की बाणी पढ़ता हूं तो मुझे प्रतिकूल हालात से निपटने के लिये अन्तःदृष्टि और शक्ति मिलती है जो व्यावहारिक समाधान की ओर ले जाती है।

मुझे लगता है कि गुरु नानक के शबद ही वह मानदंड हैं जो उनके व्यावहारिक फ़लसफ़े की पुष्टि करते हैं।

गुरु नानक ने रूपक के तौर पर विवेक की तुलना किश्ती से की जो यात्रियों को कठिनाइयों की नदी के पार ले जाती है।

गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुर तुलहा हर नाउ ॥
गुर सर सागर बोहिथो गुर तीरथ दरीआउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु से हासिल ज्ञान ही सीढ़ी और किश्ती है यह बेड़ा है जो मेरे मन को चैन देता है।
रूहानी विवेक ही वह किश्ती है जो मुझे सांसारिक समुंद्र से पार करवाती है। रूहानी विवेक ही तीर्थ का पवित्र स्थान है। गुरु ही पवित्र दरिया है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना भरुच से नर्मदा नदी के रास्ते अरब सागर से होते हुये प्रभास पटन पहुंचे।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम सड़क मार्ग से प्रभास पटन जा रहे हैं।

प्रभास पटन सदियों से जहाज़ों के निर्माण के लिये प्रसिद्ध है और एक बंदरगाह भी है। इसे सोमनाथ पटन भी कहा जाता है जिसका नाम ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर के नाम पर रखा गया है।

अमरदीप सिंह: जब गुरु नानक सोमनाथ मंदिर के दौरे पर आये, तब प्रभास पटन एक बंदरगाह शहर था। 'सोम' का अर्थ है चंद्रमा। सोमनाथ मंदिर, चंद्रमा, भगवान शिव और तीन नदियों के संगम को समर्पित है।

हम सोमनाथ मंदिर जा रहे हैं जो हिंदू तीर्थयात्रियों का केंद्र है। इस स्थान से जुड़ी मान्यता है कि जब चाँद की चाँदनी ख़त्म होने की हद तक कम हो गई थी तब भगवान शिव की ऊर्जा से यह दूज के चंद्रमा से आधा चाँद होता हुआ पूर्णिमा के चाँद के तौर पर पूर्ण नूर पर आ गया। भारतीय परंपरा के अनुसार चंद्रमा मानव मन का प्रतिनिधित्व करता है। इस लिये चंद्रमा का बढ़ना और घटना मानवीय जज़्बात में हो रहे बदलाव को पेश करता है।

सोमनाथ मंदिर इंडिया में 'ज्योतिर्लिंग' वाले बारह मंदिरों मे एक है जो भगवान शिव के विभिन्न रूपों को पेश करते हैं।

प्रभास पटन के त्रिवेणी घाट से त्रिवेणी संगम दिखाई देता है। इस संगम पर हिरण, कपिला और पौराणिक गाथाओं में दर्ज ग़ैर-हाज़िर सरस्वती अरब सागर में गिर जाती हैं।

इस संगम को हिंदू पौराणिक कथाओं में पवित्र माना जाता है क्योंकि इसके बाद यह नदियां अपनी अंतिम मंज़िल, समन्दर में जा गिरती हैं। समन्दर जन्म, जीवन और मृत्यु के संगम का प्रतिनिधित्व करता है। श्रद्धालु इस स्थान पर इबादत, मज़हबी कर्मकांड और स्नान करने के लिये आते हैं ताकि वह अपने पापों को धो सकें।

मैंने प्रभास पटन के एक मंदिर की सीढ़ियों पर एक कुत्ते को बैठे हुये देखा, जिसका ध्यान पवित्र स्थल पर टिका हुआ था। इंसान के लिये कुत्ते की विशेषता उसके मालिक के प्रति वफ़ादारी और बिना शर्त प्यार सहित कई महत्वपूर्ण विशेषताओं को व्यक्त करती है। यह नज़ारा देखकर मेरे मन में गुरु नानक का शबद आया जिसमें उन्होंने कुत्ते को रूपक के तौर पर इस्तेमाल करते हुये याद दिलाया और समझाया कि हाज़रा-हज़ूर के सामने समर्पण और उनके प्रति वफ़ादारी के लिये व्यक्ति को अपने उन कर्मों पर पहरा देना पड़ता है जो समय के साथ कर्म-कांड वाली रवायत बन जाते हैं।

एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥
भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥
(राग बिलावल, गुरु नानक)

अहंकार वाला कुत्ता अपनी बिरादरी में बेगाना हो जाता है। वह अपने शरीर के गुमान में भौंकता है।
नानक ने फ़रमाया कि मन में परेशानी होने के बावजूद हाज़रा-हज़ूर के गुणों को भूलना नहीं चाहिये।
(राग बिलावल, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने प्रभास पटन से जूनागढ़ का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम प्रभास पटन से जूनागढ़ की ओर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: जूनागढ़ गिरनार पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है। यहां कई पुरानी मस्जिदें, बौद्ध गुफ़ायें, जैन और हिंदू मंदिर हैं जो इस शहर की सांझी मज़हबी और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।

गिरनार में प्राचीन पत्थर हैं जिन पर 'बौद्ध धर्म' के उपदेश उकेरे गये हैं जो सदाचार, अमन और सद्भाव का संदेश देते हैं। यह उपदेश सम्राट अशोक ने ढाई सौ ईसा पूर्व में कलिंग की लड़ाई में अनेक मानव जीवन के नुकसान का नज़ारा देख कर और बौद्ध धर्म धारण करने के बाद इन शिलालेख के तौर पर खुदवाये थे। उन्होंने अपनी ज़िंदगी को बुध्ध के 'अहिंसा' के संदेश का प्रचार करने के लिये समर्पित किया और वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान और इंडिया में महत्वपूर्ण स्थानों पर शिलालेख स्थापित किये।

ऊपारकोट के पास बौद्ध और जैन विहारों की निशानियां मिलती हैं। पहली सदी की गुफ़ाओं के खंडहर कभी भिक्षुओं के निवास स्थान थे जो पहाड़ों को काटकर बनाये गये थे।

जब गुरु नानक ने इस स्थान का दौरा किया, तो इसका नाम 'सोरठ देश' था, जो रानी सोरठ के नाम पर रखा गया था। रानी सोरठ सिंध की सात कल्पित बहादुर महिलाओं में से एक हैं। वह अपने पति के प्यार को साबित करने के लिये अपनी जान कुर्बान करने के लिये जानी जाती हैं। उनके पति जूनागढ़ के राजा राय दियाच थे। ऐसा माना जाता है कि भारतीय संगीत परंपरा में ''राग सोरठ' के प्रेरणा स्रोत, रानी सोरठ के गुण थे। यह राग मनुष्य में अपनी मान्यताओं के अनुसार तीव्रता से अभ्यास करने की इच्छा पैदा करता है।

गुरु नानक ने अपने गहरे संदेश को व्यक्त करने के लिये स्थानीय लोक कथाओं और नैतिक कहानियों का उपयोग किया ताकि स्थानीय आबादी तक संदेश आसानी से पहुंच सके। गिरनार पहाड़ियों में गुरु नानक ने 'सोरठ राग' में गाया।

सोरठ सदा सुहावणी जे सचा मन होइ ॥
दंदी मैल न कत मन जीभै सचा सोइ ॥
ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुर सेव निसंग ॥
परहर कपड़ जे पिर मिलै खुसी रावै पिर संग ॥
(राग सोरठ, गुरु नानक)

सोरठ (विश्वास की भावना) सदा सुहानी होती है अगर मन में सत्य का वास हो तो।
जब बोल-वाणी में इत्तफ़ाक़ हो तब मन में दुविधा नहीं होती है और वह ईमान से बोलती है।

मन में बसे भय को पराजित कर लेती है और बेझिझक विवेक को हासिल कर लेती है।
सांसारिक वासनाओं को त्यागकर रूहानी ज्ञान के साथ एक हो जाती है। तब वह इलाही के साथ आनंद की हालत में रहती है।
(राग सोरठ, गुरु नानक)

जब बोलों में पाकीज़गी और दिल में अद्वैत का वास होता है, तो मन सच्चे मार्ग के आदर्शों से जुड़ जाता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना जूनागढ़ पहुंचने के बाद, गिरनार पहाड़ियों के लिये निकल पड़े।

अब हम गिरनार पहाड़ियों पर जा रहे हैं जो जूनागढ़ से चार किलोमीटर की दूरी पर है।

अमरदीप सिंह: नौ हज़ार नौ सौ निन्यानवे सीढ़ियां, गिरनार की पहाड़ियों पर बने पुरातन स्थान तक पहुंचने के लिये चढ़नी पड़ती हैं। गुरु नानक की उदासियों के समय की तरह यह अभी भी इबादत के लिये महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान हैं।

यह पुरातत्व स्थल जैन, शिव, विष्णु और शक्ति मत के मज़हबी रिवाज़ों से जुड़े हैं। प्राचीन काल से ही विभिन्न मज़हबी रिवाज़ों से जुड़े लोग गिरनार पहाड़ियों की तीरथ यात्रा करने के लिये आते रहे है।

मौजूदा दौर में भी, 'अघोरी' और 'नांगे' साधुओं सहित विभिन्न रिवाज़ों से जुड़े श्रद्धालु इन पहाड़ियों की ज़ियारत करने आते हैं।

गुरु नानक की उदासी के दौरान गिरनार की पहाड़ियां गुरु दत्तात्रेय के भक्तों के लिये महत्वपूर्ण केंद्र थीं। गुरु दत्तात्रेय का जन्म गुरु नानक से सदियों पहले हुआ था।

जन्मसाखी कलाकृत में गुरु नानक को गिरनार पहाड़ियों की यात्रा के दौरान एक आराम कर रहे संत से मुलाकात करते हुए दिखाया गया है जिसमें गुरु दत्तात्रेय को प्रतीतात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में दर्शाया गया है। गुरु दत्तात्रेय को 'तंत्र' का स्वामी माना जाता था जिसमें काला जादू भी शामिल था।

तारा सिंह नरोत्तम ने अपनी पुस्तक 'गुरु तीरथ संग्रह' में अठारह सौ चौरासी ईस्वी में दर्ज किया है कि जूनागढ़ में गुरु नानक के आगमन की यादगार के तौर पर गुरुद्वारा चरणपादुका बना हुआ था। अब उस स्थान की

कोई निशानी नहीं है। कहा जाता है कि इस स्थान का निर्माण दरवेशों के 'सुथरा शाही' बिरादरी द्वारा किया गया था जो सुथरा शाह से जुड़े थे। सुथरा शाह गुरु हरगोबिंद, छठे सिख गुरु के शिष्य थे।

जूनागढ़ में सिंधी बिरादरी के लोग रहते हैं, जिन्होंने गुरु नानक की याद में इबादत के लिये कई स्थलों का निर्माण किया है।

अमरदीप सिंह: जूनागढ़ में यह गुरुद्वारा सिंधी बिरादरी ने बनवाया था जो पाकिस्तान से पलायन करके आई थी।

हमारा एक सिंधी परिवार के घर जाने का इत्तेफ़ाक बना है, जिनके घर की चारदीवारी के अंदर ही गुरुद्वारा है।

अमरदीप सिंह: यह जूनागढ़ का सबसे पुराना गुरुद्वारा है जो सर्कल चौक में स्थित है। इस शहर में गुरु नानक के आने की याद में सिंधी बिरादरी द्वारा यह गुरुद्वारा बनाया गया था।

जूनागढ़ से गुरु नानक के पदचिन्हों से कुछ कुछ घुमाव लेकर हम द्वारका जा रहे हैं ताकि हम भगत पीपा की यादों से जुड़ सकें। भगत पीपा का फ़लसफ़ा गुरु नानक के साथ मिलता है।

भगत पीपा ने अपनी ज़िंदगी का अधिकांश हिस्सा गुजरात राज्य के बंदरगाह वाले शहर द्वारका में बिताया।

द्वारका में एक प्राचीन द्वारकाधीश मंदिर है जो भगवान कृष्ण से जुड़ा महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

भगत पीपा का जन्म चौदह सौ पच्चीस में राजस्थान के गांव गगरौन में शाही राजपूत परिवार में हुआ था। शाही ज़िंदगी की सुख-सुविधाओं का आनंद लेते हुये भी भगत पीपा के अंदर रूहानी ज्ञान की लालसा थी। वाराणसी यात्रा के दौरान, उन्होंने भगत रामानंद से अनुरोध किया कि वह गुरु के तौर पर उन्हें अपना लें। भगत रामानन्द ने उन्हें तब तक अपना शिष्य बनाने से इंकार कर दिया जब तक कि उन्होंने अपनी संसारिक रुतबे से जुड़े अहंकार को त्याग नहीं दिया, ताकि ऊँच-नीच की पहचान मिट जाये। इस प्रकार भगत पीपा ने अपने शाही रुतबे को त्याग दिया और रूहानियत के मार्ग पर चल पड़े।

भगत पीपा और उनकी पत्नी ने आम लोगों की सेवा के लिये पूरे देश का सफ़र किया और विनम्रता की अनूठी मिसाल कायम की। वे अपने संगीतबद्ध किये भजन गाकर जीवन यापन करते थे और अपनी सारी कमाई ज़रुरतमंदों में बांट देते थे।

द्वारका में भगत पीपा जी से जुड़े स्थान को खोजने के बहुत प्रयासों के बाद, हम एक छोटी सी जगह पर आये हैं जो द्वारकाधीश मंदिर के पीछे है।

दिआया लाल हरिदास: भगत माल नाम की पुस्तक में लिखा है कि पीपा जी भगत का गांव पिपावाओ हैं। पीपा जी कपड़े की सिलाई करने वाली बिरादरी के गुरु हैं। इस मंदिर में पीपा जी की मूर्ति है जो पहले मिट्टी की बनी हुई थी।

भगत पीपा भक्ति लहर के गुरु नानक के समकालीन भक्तों में शामिल हैं। गुरु नानक और भगत पीपा के बीच मुलाकात का कोई सबूत नहीं मिलता है। उनकी बाणी का गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल होना दर्शाता है कि दोनों में अद्वैतवाद और सृजना की वहदत के बारे में सांझ है।

काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥
ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥
(राग धनासरी, भगत पीपा)

मैंने दुनिया के कई इलाकों में ढूंढा लेकिन मुझे नौ निधियां अपने शरीर में मिली हैं।
जब मेरे हाज़रा-हज़ूर की बख्शीश है तो मेरे लिये आवागमन की कोई बात नहीं है।
जो ब्रह्मांड में है वह मानव के शरीर में है। भाग्यशाली व्यक्ति अपनी खोज का नतीजा अपने में पाता है।
पीपा फरमाते हैं कि ज़ाहिर सत्य ही सर्वोच्च है जो सतगुरु की रहनुमाई से ज़ाहिर होता है।
(राग धनासरी, भगत पीपा)

भगत पीपा कहते हैं कि संपूर्ण कायनात सर्व-शक्तिमान का हाज़रा रूप है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने जूनागढ़ से अहमदाबाद तक पैदल सफ़र किया।

अब हम द्वारका की ओर घुमाव लेने के बाद गुरु नानक के पदचिन्हों पर वापिस आते हुये जूनागढ़ से अहमदाबाद जा रहे हैं।

अहमदाबाद इंडिया के गुजरात राज्य में साबरमती नदी के तट पर आबाद है। ऐतिहासिक रूप से यह हिंदू राजाओं द्वारा शासित था और चौदहवीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत का हिस्सा बन गया। सुल्तान मुज़फ्फर शाह ने चौदह सौ ग्यारह में इसका नाम अहमदाबाद रखा।

अहमदाबाद में हमें गुरु नानक के आगमन की कोई निशानी नहीं मिली। गुरु नानक की नामलेवा संगत गुरुद्वारा गोबिंद धाम में जुड़ बैठती है।

इस शहर में मस्जिदें हैं जो इस्लामी और हिंदू वास्तुकला का अनूठा मिश्रण हैं। वास्तुकारों का कहना है कि इमारतें "आत्मा में हिंदू और लिबास में इस्लामी" हैं।

इन स्थानों के शिल्पकारी को देखकर, मुझे गुरु नानक के कायनाती शक्ति के गुणों की विनम्र सलाहियत वाले शबद याद आये हैं। पूरी विविधता की सर्जना करने के बावजूद यह गुण गौण रहते हैं और कभी भी अपनी क्षमता की नुमाइश नहीं करते हैं।

जा तिस भाणा ता जगत उपाइआ ॥
बाझु कला आडाण रहाइआ ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

उनकी इच्छा से ही संसार की सृजना हुई है।
अपने कौशल की ज़ाहरा नुमाइश लगाये बिना ब्रह्मांडीय शक्ति कायनात को कायम रखती है।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने अहमदाबाद से उज्जैन का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये, हम अहमदाबाद से उज्जैन जा रहे हैं।

भौगोलिक दृष्टि से उज्जैन करक रेखा पर बसा हुआ है और पहले इसका नाम अवंतीपुरा था। इस शहर पर दो प्रसिद्ध राजाओं का शासन रहा। राजा विक्रमादित्य, जिन्होनें भारतीय जंत्री प्रणाली 'विक्रमी संवत' की शुरुआत की और उनके बड़े भाई राजा भर्तृहरी नामवर, जो 'नाथ जोगी' थे।

अमरदीप सिंह: उज्जैन ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध शहर है और शिप्रा नदी के किनारे बसा है। यह अभी भी हिंदू तीर्थयात्रियों के लिये महत्वपूर्ण स्थान है।

उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर हर बारह साल में कुंभ मेला आयोजित किया जाता है।

हम अब महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर जा रहे हैं।

यह मंदिर बारह ज्योतिरलिंग मंदिरों में से एक है जो भगवान शिव का विभिन्न रूपों में प्रतिनिधित्व करते हैं। तीर्थयात्री शिप्रा नदी में डुबकी लगाने के बाद मंदिर में सजदा करते हैं।

हम अब शिप्रा नदी के किनारे गुरुद्वारा गुरु नानक घाट जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: उज्जैन में, गुरु नानक ने भर्तृहरि के शिष्य 'नाथ जोगियों' के साथ गोष्ट किया। यह गुरुद्वारा गुरु नानक के उज्जैन आगमन की याद में बनाया गया है।

गुरु नानक के यहां आगमन के समय उज्जैन में 'नाथ जोगी' बिरादरी की बड़ी आबादी थी जो भर्तृहरी जोगी के अनुयायी थे।

गुरु नानक और भाई मरदाना को शिप्रा नदी के तट पर गाते हुये सुनकर 'नाथ जोगी' उनसे पूछने आये कि वे किस भगवान की इबादत करते हैं। उन्होंने पूछा कि वह स्नान के मज़हबी महत्व को क्यों नहीं मानते और रूहानी सफ़ाई के लिये कौन सा मार्ग अपनाते हैं। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

उतर अवघट सरवरि न्नावै ॥
बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥
जल आकासी सुँन समावै ॥
रस सत झोल महा रस पावै ॥

ऐसा गिआन सुनहु अभ मोरे ॥
भरिपुर धार रहिआ सभ ठउरे ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

अवगुण त्यागकर सदगुणों के सरोवर में स्नान करो।
बेमतलब बातें करने से बचो और आत्म पड़ताल में व्यस्त हो जाओ।
जैसे आकाश में पानी वाष्पित हो जाता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी सर्व-व्यापक में लीन रहना चाहिये।
अगर कोई ईमान से निचोड़ निकालता है तो उसे अमृत रस मिलता है।
ओ मेरे मन ऐसे ज्ञान को सुनना चाहिये। हाज़रा-हज़ूर हर जगह व्याप्त है।
हाज़रा-हज़ूर हर जगह व्याप्त है।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि वह हर रूप में वास करने वाली शक्ति की आराधना करते हैं और अपने मन की मैल उतारने के लिये सत्य के जल में स्नान करते हैं।

अब हम भर्तृहरी गुफ़ाओं में जा रहे हैं जो उज्जैन शहर के बाहर की ओर हैं। इन गुफ़ाओं का नाम राजा भर्तृहरी के नाम पर रखा गया है जिन्होंने राज्य छोड़ने के बाद एक योगी का जीवन व्यतीत किया था। बाद में, उनके भक्तों और 'कनफ़टे जोगियों' ने कई मसनूई गुफ़ायें बनाई।

गुरु नानक और भाई मरदाना को जोगियों ने अपने डेरे में कुछ दिनों के लिये ठहरने के लिये आमंत्रित किया।

जोगियों ने बताया कि उन्होंने उपवास, निर्धारित मज़हबी आहार और अलौकिक शक्तियों के माध्यम से एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीने का मंत्र पाया है।

गुरु नानक ने गायन द्वारा अपना मत पेश किया,

खिमा गही ब्रत सील संतोखं ॥
रोग न बिआपै ना जम दोखं ॥
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥१॥

जोगी कउ कैसा डर होइ ॥
रूख बिरख गृह बाहर सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
निरभउ जोगी निरंजन धिआवै ॥
अनदिन जागै सच लिव लावै ॥
सो जोगी मेरै मन भावै ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

क्षमा का अमल ही सच्चा उपवास नेकचलन और संतोष है।
इससे ना रोग लगता है और ना ही मौत का कष्ट होता है।
मैं मुक्त हूँ और ब्रह्मांडीय शक्ति में लीन हूं जो निरंकार है।
जोगी (रौशन-ख़्याल) को क्या भय है?
ब्रह्मांडीय शक्ति का पेड़-पौधों में वास है वह घर के अंदर भी है और बाहर भी है।
निर्भय जोगी तो आंतरिक निरंजन का ध्यान करते हैं।
सत्य को अपना कर वह दिन-रात चेतना से जागरूक रहते हैं। ऐसे जोगी मेरे मन को भाते हैं।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि वह क्षमा और संतोष के माध्यम से अपना उपवास वाला दस्तूर निभाते हैं। मोक्ष की अवस्था में उन्हें वहदत में लीन होने का अहसास होता है। वह कुदरत का नियम निभाते हुये जीवन और मृत्यु देने वाली शक्ति के सामंजस्य में रहते हैं।

महाकालेश्वर ज्योतिरलिंग मंदिर की ज़ियारत करने वाले श्रदालु मोक्ष की आशा में भर्तृहरी गुफ़ाओं की यात्रा भी करते हैं। कुछ जियारतियों ने गुरु नानक से पूछा कि मुक्ति हासिल करने का ज़ियारत से बेहतर तरीका क्या है? जवाब में, गुरु नानक ने गाया,

अधिआतम करम करे ता साचा ॥
मुकति भेद किआ जाणै काचा ॥
ऐसा जोगी जुगत बीचारै ॥
पंच मारिसाच उर धारै ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

अध्यात्म के कर्मों के माध्यम से रुहानी ज्ञान हासिल करने वाले सच से जुड़े होते हैं।
अज्ञानी मनुष्य मोक्ष का रहस्य कैसे जान सकता है?
सच्चे योगी आत्म पड़ताल और विचार करते हैं।
वह पांच विकारों पर जीत हासिल करके अपने दिल में सत्य को बसा लेते हैं।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

मज़हबी इंतज़ाम की ज़रूरतों से निकले विचार ही उग्रपन्थी मज़हबी शिष्टाचार बनते हैं। गुरु नानक ने फ़रमाया कि अपनी आंतरिक आत्मा को जगाने के लिये अपने अंदर की गहराई में डुबकी लगाने वाले आरज़ूमंद मनुष्य ही मुक्ति का भेद ढूंढ लेते हैं।

भर्तृहरि गुफ़ाओं से थोड़ा दूर हम गुरु मच्छिंदरनाथ की समाधि देखने जा रहे हैं, जिन्हें मत्स्येंद्रनाथ के नाम से भी जाना जाता है और वह 'नाथ जोगी' सिलसिले के बानी थे।

भरथर्हरी गुरु गोरखनाथ के शिष्य थे जो गुरु मच्छिंदरनाथ के प्रसिद्ध शिष्यों में से एक थे।

ऐतिहासिक रूप से, गुरु मच्छिंदरनाथ की मान्यता हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों में रही है। विभिन्न समुदायों में 'नाथ जोगी' की मान्यता वाली जानकारी, यादगार पर लगी तख्ती पर भी दर्ज है। मुसलमान उन्हें 'पीर' कहते हैं और हिंदू उन्हें 'गुरु' कहते हैं।

उज्जैन से गुरु नानक के पदचिन्हों से कुछ घुमाव लेकर हम राजस्थान के धुनवां कलां गाँव जा रहे हैं ताकि भगत धन्ना की यादों से जुड़ने के लिये प्रयास किया जा सके। भगत धन्ना का फ़लसफ़ा गुरु नानक से मिलता था।

मत कर माया को अहंकार॥
मत कर काया को अभिमान॥
काया गार से काची॥

माया का अहंकार मत कर।
काया पर गर्व मत कर।
काया मिट्टी से कच्ची है।

काया गार से काची ॥
जैसे ओस रा मोती ॥
झोंका पवन का लग जाए झपका ॥
पवन का लग जाए काया धूल हो जासी ॥

काया मिट्टी से कच्ची है।
यह ओस की बूंद मात्र है।
यह हवा के झोंके से ख़त्म हो जायेगी।
हवा के लगने पर काया धूल बन जाती है।

भगत धन्ना की याद में धुंवा कलां में एक गुरुद्वारा और एक मंदिर बना हुआ है।

ऐसा सख्त था महाराज, जिनका मुल्कों में नाम ॥
जिन घर झूलता हाथी ॥

शक्तिशाली शासक। नामवर व्यक्ति।
ख़ज़ानों वाले। सब फ़ना हो जायेगें।

भगत धन्ना का जन्म इस गांव के एक साधारण किसान परिवार में चौदह सौ पंद्रह ईस्वी में हुआ था। उनके जीवन के विवरण से पता चलता है कि वह बचपन में बहुत ही सरल और नेकदिल इंसान थे। उन्होंने किसी ब्राह्मण की सलाह मानकर उसके दिये गये पत्थर को भगवान मानकर पूजा करनी शुरू कर दी। उनके नेक इरादों और अथाह श्रद्धा ने उनको ख़ुदाई के दर्शन करवा दिये।

मत कर माया को अहंकार ॥
मत कर काया को अभिमान ॥

माया का अहंकार मत कर।
काया पर गर्व मत कर।

एक साधारण से पत्थर से उन्हें ब्रह्मांड के संपूर्ण ऐकता के दर्शन हो गये।

गुरु नानक और धन्ना भगत के बीच मुलाकात का कोई सबूत नहीं मिलता। लेकिन उनकी बाणी को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल करने से पता चलता है कि दोनों के फ़लसफ़े में सांझ है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक देव जी, इनकी दिल छूह लेने वाली बाणी को सुनकर मंत्रमुग्ध हो गये और इसका संकलन किया। उन्होंने कई संतों की बाणी का संकलन किया। इससे हमें यह संदेश मिलता है कि गुरु नानक देव जी और धन्ना जी के ज़िंदगी में मज़हब कोई अलग- अलग नहीं हैं। कोई मज़हब आपस में वैर भाव रखना नहीं सिखाता। सभी प्यार-प्रेम से रहें।

गुरु नानक और भाई धन्ना ने कर्मों की पाकीज़गी पर ज़ोर दिया। दोनों ने हाज़रा-हज़ूर पर अटूट विश्वास रखने के महत्व को प्रोत्साहित
किया जो सबका पालनहार है। वह चट्टानो में रहने वाले विनम्र जीवों को भी जीविका प्रदान करता है।
मनोवैज्ञानिक अब्राहम मास्लो ने अपनी खोज में ज़रुरतों के पदानुक्रम पर अपने शोध में कहा है कि अगर किसी की बुनियादी ज़रुरतें पूरी होती हैं, तब वह परोपकारिता की इच्छा पालता है। धन्ना भगत अपनी निम्रता में देवनहार को उनकी बुनियादी ज़रुरतों का ध्यान रखने की विनती करते हैं ताकि वह चैन से दूसरों की सेवा में लीन हो जायें।

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगत करंते तिन के काज सवारता ॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजन तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहन चंगी ॥
जन धंना लेवै मंगी ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

हे गोपाल, यह तुम्हारी आरती है।
तू निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले विनम्र जीवों के काम संवारता है।
मेरी पुष्टि के लिये विनम्र मांग है कि मुझे एक लवेरी गाय
और एक तुर्की घोड़ा दें।
एक अच्छा जीवन साथी दें।

आप जी का विनम्र सेवक धन्ना आपसे अपनी ज़रूरतें पूरी करने
की भीख मांगता है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने उज्जैन से चित्तौड़गढ़ का सफ़र किया।

धुनवां कलां का घुमाव लेने के बाद हम अब गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये उज्जैन से चित्तौड़गढ़ जा रहे हैं।

थारा घट माहि ज्ञान का ज़ज़ीरा ॥
साहिब सुलझाइया ॥

तुम्हारे भीतर ज्ञान का द्वीप है।
इस का रहस्य साहिब सुलझायेंगे।

जब गुरु नानक और भाई मरदाना ने चित्तौड़गढ़ का सफ़र किया तब इस इलाके को मेवाड़ कहते थे।

या मन लोभी लालची रे॥
या मन कालू कीर॥
भ्रम की जाल चलावे रे॥

मन लोभी और लालची है।
इस पर अवगुणों की मैल है।
यह भ्रम का जाल फैलाता है।

अमरदीप सिंह: चित्तौड़गढ़ में पहाड़ी की चोटी पर इंडिया का सबसे बड़ा किला है। यह शहर मीराबाई के मंदिर के लिये प्रसिद्ध है जो भक्ति आंदोलन की संत थीं।

इस किले में बहुत सारी यादगारी इमारतें हैं, जिनमें से कुछ गुरु नानक के समय की हैं। इस किले में बने ऐतिहासिक जैन और हिंदू मंदिरों से पता चलता है कि यह विभिन्न मज़हबी मान्यताओं के लोगों के लिये रूहानी महत्व का स्थान था।

चित्तौड़गढ़ के किले में आज भी गुरु नानक से जुड़ा एक स्थान मौजूद है।

यह स्थान उदासीन बिरादरी ने बनवाया था। उदासीन बिरादरी की पुरानी पीढ़ी के बाबा प्रभु दास और किशन दास तो इस फानी संसार से विदा हो चुके हैं। इस स्थान का रख-रखाव रतन दास का किसानी परिवार करता है।

रतन दास: मैं रतन दास हूं। पिता का नाम गोपी लाल जी है। हम टीले पर चामुंडा माता मंदिर और गुरुद्वारे में रहते हैं। मेरे दादा गुरु किशन दास जी उदासीन, पंजाब में अमृतसर से गुरु ग्रंथ साहिब लेकर पधारे थे। उन्होंने यहां गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना की। गुरु नानक देव जी ने भ्रमण किया था। उनका उपदेश था कि संसार को संसारिक समुंद्र के पार ले जाना है। यही उनका मनोरथ था। जो सब कुछ है, है, इस के अलावा कुछ नहीं है। गुरु महाराज ने समझाया कि जीवन में पूरा संसार मिलकर सच्चे मार्ग पर चले। सत्य पर चले। तीर्थ और उपवास, सभी गुरु के चरणों में है, माता-पिता के चरणों में हैं।

चित्तौड़गढ़ के किले में विभिन्न पंथों की समान मान्यता देखकर मुझे लगता है कि सभी मज़हबों का बुनियादी मनोरथ इतफ़ाक़ वाला अस्तित्व है।

भूडड़ै नाम विसारिआ बूडड़ै किआ तिस चारो ॥
गुण छोड बिख लदिआ अवगुण का वणजारो ॥
(राग वडहंस, गुरु नानक)

नकारात्मक आदमी सोच-विचार का रास्ता भूल कर डूबा है। अब क्या किया जा सकता है?
गुणों को तिलांजलि देकर उस ने विष वाले इरादों का बोझ उठाया है और अवगुणों का सौदागर बन गया है।
(राग वडहंस, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक
रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप
एपिसोड १६: ज्ञान बोहित (विवेक की किश्ती)

चर्चा के संकेतक गुजरात और राजस्थान में गुरु नानक की ऐतिहासिक यात्राओं की समीक्षा के लिए एक आकर्षक ढांचा प्रस्तुत करते हैं और इन विविध संदर्भों में उन्होंने जो गहन दार्शनिक ज्ञान प्रदान किया, उसका मूल्यांकन करने का अवसर देते हैं। विभिन्न रुहानी परंपराओं के साथ उनकी सहभागिता और स्थापित धार्मिक प्रथाओं के प्रति उनके विचारशील उत्तरों की खोज करके, हम इस बात की मूल्यवान समझ प्राप्त करते हैं कि उनके एकता, आंतरिक सत्य और व्यावहारिक रुहानीता के संदेशों ने किस प्रकार विद्यमान विश्वास प्रणालियों को चुनौती दी और समृद्ध किया। ये प्रश्न गुरु नानक द्वारा पर्यावरणीय जागरूकता, आंतरिक शुद्धिकरण और रुहानी ज्ञान की सार्वभौमिक सुलभता के समर्थन पर गंभीर विचार करने को प्रेरित करते हैं। उनके संदेश क्षेत्रीय और धार्मिक सीमाओं से परे चले गए, और मूलभूत मानवीय चिंताओं को संबोधित किया। इन अन्वेषण बिंदुओं के माध्यम से, हम वास्तव में इस बात की सराहना कर सकते हैं कि गुरु नानक की यात्राओं ने उनके महत्वपूर्ण संदेश को किस प्रकार प्रसारित किया और परंपराओं के पार सार्थक वार्तालाप को प्रोत्साहित किया। इसका परिणाम एक ऐसी दर्शनशास्त्र के रूप में हुआ जो आज के धार्मिक कट्टरता, पर्यावरणीय क्षरण और प्रामाणिक रुहानी अनुभव की सतत खोज जैसे मुद्दों का सामना करने में अत्यंत प्रासंगिक बना हुआ है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक द्वारा पश्चिम भारत के माध्यम से चुने गए यात्रा मार्ग का क्या महत्व था?

यह एपिसोड गुरु नानक की दौलताबाद से भरूच, प्रभास पाटन, जूनागढ़, अहमदाबाद, उज्जैन और चित्तौड़गढ़ तक की यात्रा को रेखांकित करता है। प्रत्येक स्थान ऐतिहासिक रूप से व्यापार, धर्म या राजनीतिक शक्ति का केंद्र रहा है। उदाहरण के लिए, भरूच एक प्राचीन नगर था जहाँ नर्मदा नदी अरब सागर से मिलती है, जो जहाज निर्माण का केंद्र और छठी शताब्दी ईसा पूर्व से व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण बंदरगाह रहा है। इसी प्रकार, प्रभास पाटन सदियों से जहाज निर्माण के लिए प्रसिद्ध रहा है और यह ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर के लिए जाना जाता है। गुरु नानक ने इन स्थानों को विभिन्न समुदायों से सार्थक वार्तालाप करने के लिए रणनीतिक रूप से कैसे चुना होगा?

२. प्राचीन तीर्थस्थलों ने गुरु नानक द्वारा देखे गए धार्मिक परिदृश्य को कैसे आकार दिया?

एपिसोड में विभिन्न धार्मिक परंपराओं से संबंधित अनेक पवित्र स्थलों का उल्लेख है, जहाँ गुरु नानक ने यात्रा की, जिनमें भरूच का भृगु ऋषि मंदिर, प्रभास पाटन का सोमनाथ मंदिर, ९९९९ सीढ़ियों वाले गिरनार पर्वत जिनसे प्राचीन स्थल तक पहुँचा जा सकता है, उज्जैन का महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर, और जैन एवं हिंदू मंदिरों से युक्त चित्तौड़गढ़ किला शामिल हैं। ये स्थल विभिन्न धर्मों के तीर्थयात्रियों को रुहानी ज्ञान की खोज में आकर्षित करते हैं। इन स्थलों पर गुरु नानक की सहभागिता का अध्ययन करके हम स्थापित धार्मिक केंद्रों के प्रति उनके दृष्टिकोण के बारे में क्या अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं?

३. गुरु नानक की तपस्वी परंपराओं के साथ सहभागिता सोलहवीं सदी के भारत की धार्मिक विविधता के बारे में क्या प्रकट करती है?

अपनी यात्रा के दौरान, गुरु नानक ने विभिन्न तपस्वी परंपराओं के साथ वार्तालाप किया, जिनमें भरूच में एक 'सन्यासिन' (महिला संन्यासी) और उज्जैन में 'नाथ योगी' (तपस्वी) शामिल थे, जो भरथरी हरि के अनुयायी थे। एपिसोड में उल्लेख है कि गुरु नानक की यात्रा के समय गिरनार पर्वत गुरु दत्तात्रेय और 'अघोरियों' के अनुयायियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, और 'नंगे साधु', अन्य कई परंपराओं के अनुयायी भी इन पहाड़ियों पर एकत्र होते रहे हैं। ये विविध रुहानी परंपराएँ उस काल के भारत के धार्मिक परिदृश्य में कैसे योगदान दे रही थीं?

४. विभिन्न समुदायों ने इन क्षेत्रों में गुरु नानक की यात्राओं की स्मृति को कैसे संरक्षित किया है?

एपिसोड में गुरु नानक की यात्राओं की स्मृति में स्थापित कई स्थलों का उल्लेख किया गया है, जैसे भरूच में 'नानक वाड़ी' (नानक की बग़ीचा) जिसे 'उदासीन' (तपस्वी) समुदाय ने स्थापित किया, १९८८ में नर्मदा नदी के तट पर निर्मित गुरुद्वारा चादर साहिब, जूनागढ़ में कभी अस्तित्व में रहा गुरुद्वारा चरणपादुका, और सिंधी समुदाय द्वारा निर्मित गुरुद्वारे। ये स्मारक स्थल स्थानीय समुदायों पर गुरु नानक की यात्राओं के प्रभाव और पंजाब से परे उनके दर्शन के प्रसार के बारे में हमें क्या बताते हैं?

५. गुरु नानक और भक्ति आंदोलन के अन्य संतों के बीच कौन से ऐतिहासिक संबंध मौजूद हैं?

एपिसोड गुरु नानक और उनके समकालीन संतों जैसे भगत पीपा और भगत धन्ना के बीच दार्शनिक सामंजस्य की चर्चा करता है, जिनके सबद गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित हैं। यद्यपि इस बात का कोई दस्तावेज़ी प्रमाण नहीं है कि भगत धन्ना और गुरु नानक का प्रत्यक्ष मिलन हुआ, उनके लेखन की सम्मिलितता उनके दार्शनिक सामंजस्य को दर्शाती है। इसी प्रकार, भगत पीपा के साथ भी गुरु नानक के प्रत्यक्ष मिलन का कोई प्रमाण नहीं है, फिर भी उनके अद्वैत के साझा दर्शन उन्हें जोड़ते हैं। इन संतों के

रुहानी दृष्टिकोण की गुरु नानक द्वारा की गई स्वीकृति ने उत्तरी भारत में एक व्यापक रुहानी सुधार आंदोलन में कैसे योगदान दिया?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की पर्यावरणीय चेतना उनके दर्शन में कैसे प्रकट होती है?

यह एपिसोड गुरु नानक द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के महत्व पर डाले गए विशेष बल को उजागर करता है। इसमें एक सबद का उल्लेख है जिसमें वे प्राकृतिक तत्वों की तुलना मानवीय संबंधों से करते हैं — वायु को गुरु, जल को पिता और धरती को माता की पोषक कोख बताया गया है। यह पारिस्थितिक जागरूकता मनुष्य और प्रकृति के संबंध की दार्शनिक समझ को कैसे दर्शाती है, और यह समकालीन पर्यावरण नैतिकता को कैसे प्रभावित कर सकती है?

२. गुरु नानक द्वारा बुद्धिमत्ता को नाव के रूपक के रूप में प्रस्तुत करने का क्या महत्व है?

गुरु नानक नाव के रूपक का उपयोग करते हैं, जो यात्रियों को विशाल समुद्र पार कराने का माध्यम होती है। अपने एक सबद में वे कहते हैं कि रुहानी ज्ञान ऐसी ही एक नाव या बेड़ा है, जो व्यक्ति को आंतरिक मनन के माध्यम से संसार रूपी कठिनाइयों के महासागर को पार करने में सहायक बनती है। यह विस्तृत रूपक जीवन की चुनौतियों से पार पाने के लिए गुरु नानक के रुहानी दृष्टिकोण को औपचारिक धार्मिक अनुष्ठानों के विपरीत कैसे दर्शाता है?

३. उज्जैन में नाथ योगियों को दिए गए उत्तर में गुरु नानक के रुहानी अभ्यासों के दृष्टिकोण का क्या प्रतिबिंब है?

उज्जैन के योगियों का दावा था कि उपवास, विशेष धार्मिक आहार का पालन, और अलौकिक शक्तियों की साधना उन्हें दीर्घायु एवं रोग-मुक्त जीवन के रहस्यों की प्राप्ति कराती है। इसके उत्तर में, गुरु नानक ने क्षमा को उपवास की तरह एक आंतरिक अनुशासन के रूप में प्रस्तुत किया, जो सच्चे संतोष की प्राप्ति में सहायक है। उन्होंने यह रेखांकित किया कि क्षमा को अपनाकर व्यक्ति रोगों और मृत्यु के भय से मुक्त हो सकता है। यह वार्तालाप गुरु नानक द्वारा बाहरी अनुष्ठानों के स्थान पर आंतरिक गुणों को रुहानी उन्नति हेतु प्राथमिकता देने की सोच को कैसे स्पष्ट करता है?

४. रुहानी शुद्धिकरण हेतु गुरु नानक धार्मिक स्नान के विकल्प के रूप में क्या प्रस्तुत करते हैं?

उज्जैन में जब गुरु नानक से पूछा गया कि वे किस रूप में ईश्वर की आराधना करते हैं, वे धार्मिक स्नान को क्यों महत्व नहीं देते, और रुहानी शुद्धि के लिए वे किस मार्ग का समर्थन करते हैं, तो उन्होंने आंतरिक शुद्धि पर बल दिया। उन्होंने बताया कि बुरे इरादों को त्यागकर अच्छे विचारों के सरोवर में डुबकी लगाकर स्वयं को शुद्ध किया जा सकता है, व्यर्थ नकारात्मक वाणी से बचा जा सकता है, और आत्म-चिंतन द्वारा आंतरिक परिष्कार किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण उनके समय की धार्मिक परंपराओं में प्रचलित रुहानी पवित्रता की धारणाओं को कैसे चुनौती देता है?

५. गुरु नानक की विनम्रता की अवधारणा ईश्वर और मनुष्य के संबंध की समझ को कैसे पुनर्परिभाषित करती है?

एपिसोड में गुरु नानक के एक गहरे सबद का उल्लेख है, जो एक सर्वव्यापक शक्ति की सृजनात्मकता पर प्रकाश डालता है, जिसने केवल अपनी इच्छा से ब्रह्मांड की रचना की। यह ब्रह्मांडीय ऊर्जा न केवल संसार को बनाए रखती है बल्कि किसी भी शारीरिक कौशल का प्रदर्शन किए बिना विनम्रता से यह कार्य करती है। यह धारणा एक अनूठी ईश्वरीय विनम्रता को दर्शाती है; यह रचनात्मक शक्ति अद्भुत सृष्टि प्रकट करने के बाद भी अपने सामर्थ्य को नम्रतापूर्वक छिपाए रहती है। विनम्रता की यह दृष्टि पारंपरिक धर्मशास्त्रीय ढांचों को कैसे चुनौती देती है और शक्ति तथा उपलब्धियों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करती है?

६. मोक्ष प्राप्ति के विषय में गुरु नानक का दृष्टिकोण क्या है?

जब भरथरी की गुफाओं में तीर्थयात्रियों ने पूछा कि क्या उपासना स्थलों की यात्रा से बेहतर कोई मार्ग है मोक्ष प्राप्ति का, तो गुरु नानक ने कहा कि जो व्यक्ति रुहानी ज्ञान प्राप्त करने के लिए कर्म करता है, वह सत्य से जुड़ता है। उन्होंने प्रश्न किया कि अज्ञानी व्यक्ति मोक्ष का रहस्य वास्तव में कैसे समझ सकता है? साथ ही, उन्होंने कहा कि धार्मिक अनुष्ठान मात्र विश्वास प्रणालियों द्वारा गढ़ी गई अवधारणाएँ हैं। गुरु नानक ने यह रेखांकित किया कि जो साधक ईमानदारी से अपने भीतर की खोज करते हैं और अपने चेतन को जागृत करते हैं, वे मोक्ष के रहस्यों को जान सकते हैं। यह आंतरिक केंद्रित दृष्टिकोण बाहरी धार्मिक क्रियाओं पर आधारित परंपराओं की तुलना में किस प्रकार भिन्न है?